श्रीमद्भगवद्गीता अमृत

ॐ श्री कृष्ण शरणं मम ॐ

卐 अक्षरब्रह्मयोग नामक आठवा अध्याय 卐

ठाकुर भिम सिंह द्वारा प्रस्तुत

श्रीमद्भगवद्गीता अमृत

श्लोकों के गूढ़ रहस्यों के साथ

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

www.thakurbhimsingh.com - Copyright Thakurbhimsingh.com. 2008 - All rights reserved

श्रीमद्भगवद्गीता अमृत

अक्षरब्रह्मयोग- नामक आठवाँ अध्याय

01-07 ब्रह्म, अध्यात्म और कर्मादि के विषय में अर्जुन के सात प्रश्न और उनका उत्तर

08-22 भक्ति योग का विषय

23-28 शुक्ल और कृष्ण मार्ग का विषय

अर्जुन उवाच :

किं तद् ब्रह्म, किम् अध्यात्मं, किं कर्म पुरुषोत्तम ।
अधिभूतं च किं प्रोक्तम् अधिदैवं किम् उच्यते ॥१॥
अधियज्ञः कथं कोऽत्र देहेऽस्मिन् मधुसूदन ।
प्रयाणकाले च कथं ज्ञेयोऽसि नियतात्मभिः ॥२॥

अर्जुन बोले— हे पुरुषोत्तम, ब्रह्म क्या है? अध्यात्म क्या है? कर्म क्या है? अधिभूत तथा अधिदैव किसे कहते हैं? अधियज्ञ कौन है तथा वह इस देह में कैसे रहता है? हे मधुसूदन, संयत चित्त वाले मनुष्य द्वारा अन्त समय में आप किस तरह जाने जाते हैं? (८.०१-०२)

BG 8.1-2: Arjun said: O Supreme Lord, what is Brahman (Absolute Reality), what **is *adhyatma*** (the individual soul), and what is karma? What is said to be *adhibhuta*, and who is said to be *Adhidaiva*? Who is *Adhiyajna* in the body and how is He the *Adhiyajna*? O Krishna, how are You to be known at the time of death by those of steadfast mind?

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

श्रीभगवानुवाच

अक्षरं ब्रह्म परमं स्वभावोऽध्यात्मम् उच्यते ।
भूतभावोद्भवकरो विसर्गः कर्मसंज्ञितः ॥३॥

श्रीभगवान बोले— परम अक्षर ॐ ही ब्रह्म है । स्वभाव - अर्थात परा प्रकृति जीव को अध्यात्म कहा जाता है । प्राणियों की सत्ता को प्रकट करने वाला त्याग को कर्म कहते है ।. (८.०३)

BG 8.3: The Lord said: The Supreme Indestructible Entity is called Brahman; one's own self is called *adhyatma*. Actions pertaining to the material personality of living beings, and its development are called karma, or fruitive activities.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

www.thakurbhimsingh.com - Copyright Thakurbhimsingh.com. 2008 - All rights reserved

अधिभूतं क्षरो भावः पुरुषश्चाधिदैवतम् ।
अधियज्ञोऽहम् एवात्र देहे देहभृतां वर ॥४॥

हे श्रेष्ठ अर्जुन, नश्वर वस्तु (माया और पंचतत्त्व से बने हुये प्रकृत्तिक वस्तुयें) को अधिभूत और अक्षरब्रह्म के विस्तार (नारायण, विराट स्वरूप आदि) को अधिदैव कहते हैं. इस शरीर में ईश्वररूप मैं, परब्रह्म परमात्मा, ही अधियज्ञ हूं. (८.०४)

BG 8.4: O best of the embodied souls, the physical manifestation that is constantly changing is called *adhibhūta*; the universal form of God, which presides over the celestial gods in this creation, is called *Adhidaiva*; I, who dwell in the heart of every living being, am called *Adhiyajna*, or the Lord of all sacrifices.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

अन्तकाले च माम् एव स्मरन् मुक्त्वा कलेवरम् ।
यः प्रयाति स मद्भावं याति नास्त्य् अत्र संशयः ॥५॥

जो मनुष्य अन्तकाल में भी मेरा ही स्मरण करते हुए शरीर छोड़ता है, वह मुझे ही प्राप्त होता है. इसमें सन्देह नहीं है. (प्र.उ. ३.१० भी देखें) (८.०५)
जैसे अजाामलि, शर्वण कुमार, बाली, जटायु, रावन, कुमकरण आदि ।

BG 8.5: Those who relinquish the body while remembering Me at the moment of death will come to Me. There is certainly no doubt about this.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

यं यं वापि स्मरन् भावं त्यजत्य् अन्ते कलेवरम् ।
तं तं एवैति कौन्तेय सदा तद्भावभावितः ॥६॥

हे अर्जुन, मनुष्य मरने के समय जिस किसी भी भाव को स्मरण करता हुआ शरीर त्यागता है, वह सदा उस भाव के चिन्तन करने के कारण उसी भाव को प्राप्त होता है. (छा.उ. ३.१४.०१ भी देखें) (८.०६) ।
इसिलिये जब वह मृत्युलोक में फिर से जनमता है तो उस के पिछले जनम के संस्कार और भाव-स्वभाव उस के साथ होतें हैं और वह उसी के अनुसार बरताव करने लगता है ।

BG 8.6: Whatever one remembers upon giving up the body at the time of death, O son of Kunti, one attains that state, being always absorbed in such contemplation.
When one is reborne, he continues journey from where he left in his previous life.

www.thakurbhimsingh.com - Copyright Thakurbhimsingh.com. 2008 - All rights reserved

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

तस्मात् सर्वेषु कालेषु माम् अनुस्मर युध्य च ।
मय्य् अर्पितमनोबुद्धिर् माम् एवैष्यस्य् असंशयम् ॥७॥

इसलिए हे अर्जुन, तुम सदा मेरा स्मरण करो और अपना कर्तव्य करो. इस तरह मुझ में अर्पण किए मन और बुद्धि से युक्त होकर निस्सन्देह तुम मुझको ही प्राप्त होगे. (१२.०८ भी देखें) (८.०७) ।
ये कितना सुन्दर उपदेश भगवान् हम को आकारण दे रहे हैं । इसलिय जहाँ तक बन सके, परमेश्वर का नाम पल-पल, क्षण-क्षण लेते रहो । उसे अपना परम लक्ष बना लो और "हरे राम हरे कृष्ण" या "हरी ॐ तत्त-सत" या फिर "ॐकार" जपा करो । तुम्हारा कल्यान अवश्य होगा ।

BG 8.7: Therefore, always remember Me and also do your duty of fighting the war. With mind and intellect surrendered to Me, you will definitely attain Me; of this, there is no doubt.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

अभ्यासयोगयुक्तेन चेतसा नान्यगामिना ।
परमं पुरुषं दिव्यं याति पार्थानुचिन्तयन् ॥८॥

हे पार्थ, परमात्मा के ध्यान के अभ्यासरूपी योग से युक्त, एकाग्र चित्त से परमात्मा का निरन्तर चिन्तन करता हुआ साधक परब्रह्म परमात्मा को प्राप्त होता है. (८.०८) ।
यदि भाव सुन्दर न भी हो और प्राणी भय या शत्रुता के भाव से भी नाम निरंतर लेता हो तो भी निरंतर नाम का प्रभाव कल्याणकारी होता है - जैसे कंस और रावण जो डर के कारण राम-राम अथवा कृष्ण-कृष्ण बोला करते थे जिसके प्रताप से उन्हें मुक्ति मिल गइ ।

BG 8.8: With practice, O Parth, when you constantly engage the mind in remembering Me, the Supreme Divine Personality, without deviating, you will certainly attain Me.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

कविं पुराणम् अनुशासितारम्, अणोर् अणीयांसम् अनुस्मरेद् यः ।
सर्वस्य धातारम् अचिन्त्यरूपम्, आदित्यवर्णं तमसः परस्तात् ॥९॥
प्रयाणकाले मनसाचलेन, भक्त्या युक्तो योगबलेन चैव ।
भ्रुवोर् मध्ये प्राणम् आवेश्य सम्यक्, स तं परं पुरुषम् उपैति दिव्यम् ॥१०॥

www.thakurbhimsingh.com - Copyright Thakurbhimsingh.com. 2008 - All rights reserved

जो भक्त सर्वज्ञ, अनादि, सबके नियन्ता, सूक्ष्म से सूक्ष्म, सबका पालन पोषण करने वाला, अचिन्त्यरूप, सूर्य के समान प्रकाशित तथा अविद्या से परे परमात्मा का सदा स्मरण करता है, वह अचल मन से योगबल के द्वारा प्राण को भृकुटी के बीच में अच्छी तरह से स्थापित करके शरीर छोड़ने पर परमात्मा को प्राप्त करता है. (कठो.उ. २.२०, यजु.वे. ३१.१८ तथा गीता ४.२६, ५.२७, ६.१३ भी देखें) (८.०६-१०)

BG 8.9-10: God is Omniscient, the most ancient One, the Controller, subtler than the subtlest, the Support of all, and the possessor of an inconceivable divine form; He is brighter than the sun, and beyond all darkness of ignorance. One who at the time of death, with unmoving mind attained by the practice of Yog, fixes the *prāṇ* (life-airs) between the eyebrows, and steadily remembers the Divine Lord with great devotion, certainly attains Him.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

यद् अक्षरं वेदविदो वदन्ति, विशन्ति यद् यतयो वीतरागाः ।
यद् इच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति, तत् ते पदं संग्रहेण प्रवक्ष्ये ॥११॥

वेद के जानने वाले विद्वान् जिसे अविनाशी कहते हैं, आसक्तिरहित यत्नशील महात्मा जिसे प्राप्त करते हैं और जिस परमपद की प्राप्ति के लिए साधक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करते हैं, उसे मैं तुम्हें संक्षेप में कहूंगा. (कठो.उ. २.१५ भी देखें) (८.११)

BG 8.11: Scholars of the Vedas describe Him as Imperishable; great ascetics practice the vow of celibacy and renounce worldly pleasures to enter into Him. I shall now explain to you briefly the path to that goal.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

सर्वद्वाराणि संयम्य मनो हृदि निरुध्य च ।
मूर्ध्न्य् आधायात्मनः प्राणम् आस्थितो योगधारणाम् ॥१२॥
ओम् इत्य् एकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन् माम् अनुस्मरन् ।
यः प्रयाति त्यजन् देहं स याति परमां गतिम् ॥१३॥

जो साधक सब इन्द्रियों को वश में करके, मन को परमात्मा में और प्राण को मस्तक में स्थापित कर तथा योगधारणा में स्थित होकर अक्षरब्रह्म की ध्वनि-शक्ति, ओंकार, का उच्चारण करके मेरा

www.thakurbhimsingh.com - Copyright Thakurbhimsingh.com. 2008 - All rights reserved

स्मरण करता हुआ शरीर त्यागता है, वह परमगति को प्राप्त होता है. (८.१२-१३). यह बात अवश्य याद होनी चाहिये कि इन्द्रियों को वश में करना सहज नहीं अपितु बहुत ही कठिन है। इस से पहले चार योग अर्थात यम, नीयम, आसन, और प्राणायाम प्रत्याहार की साधन करना अनिवार्य है तब कहीं जा के साधक इन्द्रिये निग्राह (प्रत्याहार) में शक्षम हो सकेगा। इसके पश्चात्त ही वह धयान और अंततः समाधी को धारण करनेमें सक्षम हो सकेगा।

BG 8.12: Restraining all the gates of the body and fixing the mind in the heart region, and then drawing the life-breath to the head, one should get established in steadfast yogic concentration.

BG 8.13: One who departs from the body while remembering Me, the Supreme Personality, and chanting the syllable Om, will attain the supreme goal.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः।
तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः ॥१४॥

हे अर्जुन, जो मुझ में ध्यान लगाकर नित्य मेरा स्मरण करता है, उस नित्ययुक्त योगी को मैं सहज ही प्राप्त होता हूं. (८.१४)।
ये इसलिये क्योंकि वह हर समय मुझे ही याद करता है औत कुछ नहीं। तो अन्त समय भी मैं ही उस के यादों में आऊँगा।

BG 8.14: O Parth, for those yogis who always think of Me with exclusive devotion, I am easily attainable because of their constant absorption in Me.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

माम् उपेत्य पुनर्जन्म दुःखालयम् अशाश्वतम्।
नाप्नुवन्ति महात्मानः संसिद्धिं परमां गताः ॥१५॥

महात्मा लोग परम सिद्धिरूपी मुझे प्राप्त करने के बाद फिर इस नश्वर दुःख भरे सन्सार में पुनर्जन्म नहीं लेते. (८.१५)।

BG 8.15: Having attained Me, the great souls are no more subject to rebirth in this world, which is transient and full of misery, because they have attained the highest perfection.

www.thakurbhimsingh.com - Copyright Thakurbhimsingh.com. 2008 - All rights reserved

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

आब्रह्मभुवनाल् लोकाः पुनरावर्तिनोऽर्जुन ।
माम् उपेत्य तु कौन्तेय पुनर्जन्म न विद्यते ॥१६॥

हे अर्जुन, ब्रह्मलोक और उसके नीचे के सभी लोकों के प्राणियों का पुनर्जन्म होता है; परन्तु हे कुन्ती पुत्र, मेरा लोक अर्थात् परमधाम प्राप्त होने पर मनुष्य का पुनर्जन्म नहीं होता. (६.२५ भी देखें) (८.१६) ।

परमधाम वैकुण्ठ, गोलोक, शिवलोक और सकेतलोक को माना जाता है । इस के विपरीत और जितने लोक हैं जैसे ब्रह्मलोक, देवलोक आदि यह सब के सब अनित्य हैं ।

BG 8.16: In all the worlds of this material creation, up to the highest abode of Brahma, you will be subject to rebirth, O Arjun. But on attaining My Abode, O son of Kunti, there is no further rebirth.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

सहस्रयुगपर्यन्तम् अहर् यद् ब्रह्मणो विदुः ।
रात्रिं युगसहस्रान्तां तेऽहोरात्रविदो जनाः ॥१७॥

जो लोग यह जानते हैं कि ब्रह्माजी के एक दिन की अवधि एक हजार युग (अर्थात् ४.३२ अरब वर्ष) है तथा उनकी एक रात की अवधि भी एक हजार युग है, वे दिन और रात को जानने वाले हैं. (८.१७). **१००० चौकड़ी युग अर्थात ४३,२०,००,००,००. अर्थात् ४.३२ अरब वर्ष (4,320,000,000 human years.).**

BG 8.17: One day of Brahma (*kalp*) lasts a thousand cycles of the four ages (*mahā yug*) and his night also extends for the same span of time. The wise who know this understand the reality about day and night.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

अव्यक्ताद् व्यक्तयः सर्वाः प्रभवन्त्य् अहरागमे ।
रात्र्यागमे प्रलीयन्ते तत्रैवाव्यक्तसंज्ञके ॥१८॥

ब्रह्माजी के दिन के आरम्भ में अव्यक्त अक्षर ब्रह्म (अर्थात् आदि प्रकृति) से सारा जगत उत्पन्न होता है, तथा ब्रह्माजी की रात्रि के आने पर जगत उस अव्यक्त में ही विलीन हो जाता है. (८.१८)

www.thakurbhimsingh.com - Copyright Thakurbhimsingh.com. 2008 - All rights reserved

BG 8.18: At the advent of Brahma's day, all living beings emanate from the unmanifest source. And at the fall of his night, all embodied beings again merge into their unmanifest source.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

भूतग्रामः स एवायं भूत्वा भूत्वा प्रलीयते ।
रात्र्यागमेऽवशः पार्थ प्रभवत्य् अहरागमे ॥१६॥

हे पार्थ, वही प्राणिसमुदाय उत्पन हो हो कर बार-बार ब्रह्माजी के दिन में उत्पन्न तथा ब्रह्माजी के रात्रि में विलीन होता रहता है. (८.१६)

BG 8.19: Multitudes of beings repeatedly take birth with the advent of Brahma's day, and are reabsorbed on the arrival of the cosmic night, to manifest again automatically on the advent of the next cosmic day.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

परस् तस्मात् तु भावोऽन्यो ऽव्यक्तोऽव्यक्तात् सनातनः ।
यः स सर्वेषु भूतेषु नश्यत्सु न विनश्यति ॥२०॥
अव्यक्तोऽक्षर इत्य् उक्तस् तम् आहुः परमां गतिम् ।
यं प्राप्य न निवर्तन्ते तद् धाम परमं मम ॥२१॥

परन्तु इस क्षर प्रकृति से परे एक दूसरी अविनाशी आदि प्रकृति है, जो सब भूतों के नष्ट होने पर भी नष्ट नहीं होती. उसी को अव्यक्त अक्षरब्रह्म अर्थात् परमगति कहा गया है, वही मेरा परमधाम है, जिसे प्राप्तकर मनुष्य आवागमन के बन्धनों से मुक्त हो जाता है. (८.२०-२१)

BG 8.20: Transcendental to this manifest and unmanifest creation, there is yet another unmanifest eternal dimension. That realm does not cease even when all others do.
BG 8.21: That unmanifest dimension is the supreme goal, and upon reaching it, one never returns to this mortal world. That is My Supreme Abode.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

पुरुषः स परः पार्थ भक्त्या लभ्यस् त्व् अनन्यया ।
यस्यान्तःस्थानि भूतानि येन सर्वम् इदं ततम् ॥२२॥

www.thakurbhimsingh.com - Copyright Thakurbhimsingh.com. 2008 - All rights reserved

हे पार्थ, सभी प्राणी जिस परमात्मा के अन्दर हैं तथा जिससे यह सारा संसार व्याप्त है, वह परम पुरुष परमात्मा अनन्यभक्ति से ही प्राप्त होता है. (६.०४, ११.५५ भी देखें) (८.२२)

BG 8.22: The Supreme Divine Personality is greater than all that exists. Although He is all-pervading and all living beings are situated in Him, yet He can be known only through devotion.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

यत्र काले त्व् अनावृत्तिम् आवृत्तिं चैव योगिनः ।
प्रयाता यान्ति तं कालं वक्ष्यामि भरतर्षभ ॥२३॥
अग्निर् ज्योतिर् अहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम् ।
तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः ॥२४॥
धूमो रात्रिस् तथा कृष्णः षण्मासा दक्षिणायनम् ।
तत्र चान्द्रमसं ज्योतिर् योगी प्राप्य निवर्तते ॥२५॥
शुक्लकृष्णे गती ह्येते जगतः शाश्वते मते ।
एकया यात्य् अनावृत्तिम् अन्ययावर्तते पुनः ॥२६॥

हे भरतकुल श्रेष्ठ, जिस मार्ग द्वारा शरीर त्यागकर गये हुए योगीजन वापस न लौटने वाली गति को और वापस लौटने वाली गति को प्राप्त होते हैं, उन दोनों मार्गों को मैं तुम्हें बताऊंगा. (८.२३) जो ब्रह्मविद् साधकजन अग्नि, प्रकाश, दिन, शुक्लपक्ष और उत्तरायण के छः मास वाले (ज्ञान का प्रकाश) मार्ग द्वारा जाते हैं, वे ब्रह्म को प्राप्त होते हैं (तथा पुनः संसार में वापस नहीं आते हैं). (छा.उ. ४.१५.०५, ५.१०.०१, बृह.उ. ६.२.१५, प्र.उ.१.१० तथा ईशा.उ. १८ भी देखें) (८.२४)

धूम, (अंधकार) रात्रि, कृष्णपक्ष और दक्षिणायन के छः मास वाले (अज्ञान) मार्ग से जाने वाला सकाम योगी स्वर्ग जाकर पुनः वापस आता है. (छा.उ. ५.१०.०३-०५, ब्र.सू. ३.०१.०८ तथा गीता ६.२१ भी देखें) (८.२५)

जगत में ये दो — शुक्ल और कृष्ण (अर्थात् ज्ञान और अज्ञान) — सनातन मार्ग माने गये हैं. इनमें ज्ञान मार्ग के द्वारा जाने वालों को लौटना नहीं पड़ता और अज्ञान मार्ग वालों को लौटना पड़ता है. (८.२६). शुक्ल मार्ग को चैन करने वाला व्यक्ति निशकामी होने के कारण संसारिक बन्धन में नहीं पड़ता और सीधे परमगति को प्राप्त हो जाता है । कृष्ण मार्ग को चैन करने वाला व्यक्ति सकामी होने के कारण नाशवान संसारिक पदार्थों को पाने के लिये इस संसार में उलझा रहता है और इसी कारण आवा गमन के चक्कर में फसा रहता है ।

www.thakurbhimsingh.com - Copyright Thakurbhimsingh.com. 2008 - All rights reserved

BG 8.23-26: I shall now describe to you the different paths of passing away from this world, O best of the Bharatas, one of which leads to liberation and the other leads to rebirth. Those who know the Supreme Brahman and who depart from this world, during the six months of the sun's northern course, the bright fortnight of the moon, and the bright part of the day, attain the supreme destination. The practitioners of Vedic rituals, who pass away during the six months of the sun's southern course, the dark fortnight of the moon, the time of smoke, the night, attain the celestial abodes. After enjoying celestial pleasures, they again return to the earth. These two, bright and dark paths, always exist in this world. The way of light leads to liberation and the way of darkness leads to rebirth.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

नैते सृती पार्थ जानन् योगी मुह्यति कश्चन ।
तस्मात् सर्वेषु कालेषु योगयुक्तो भवार्जुन ॥२७॥

हे पार्थ, इन दो मार्गों को तत्त्व से जानने वाला कोई भी योगी भ्रमित नहीं होता. इसलिए हे अर्जुन, तुम सदा योगयुक्त रहो. (८.२७). अर्थात जो तत्व से दोनो मार्गों को जान लेता है, वह सही मार्ग अर्थात शुक्ल मार्ग को ही अपनाता है। वह निशकाम भाव से हर एक कर्म को अपना परम कर्तव्य समझ कर पूरी निष्ठा के साथ करता है। भगवदभाव होने के कारण उसे ब्रह्मपद मिल जाता है।

BG 8.27: Yogis who know the secret of these two paths, O Parth, are never bewildered. Therefore, at all times be situated in Yog (union with God).

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

वेदेषु यज्ञेषु तपःसु चैव, दानेषु यत् पुण्यफलं प्रदिष्टम् ।
अत्येति तत् सर्वम् इदं विदित्वा योगी परं स्थानम् उपैति चाद्यम् ॥२८॥

योगी इस अध्याय को समझकर वेदों में, यज्ञों में, तपों में तथा दान में जो पुण्यफल कहे गये हैं, उन सबका उल्लंघन कर जाता है और परब्रह्म परमात्मा के परमधाम को प्राप्त करता है. (८.२८)

BG 8.28: The yogis, who know this secret, gain merit far beyond the fruits of Vedic rituals, the study of the Vedas, performance of sacrifices, austerities, and charities. Such yogis reach the Supreme Abode.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

www.thakurbhimsingh.com - Copyright Thakurbhimsingh.com. 2008 - All rights reserved

गीता दर्पण के आठवे अध्याय का तात्पर्य :-

अन्तकालीन चिन्तन के अनुसार ही जीव की गति होती है, इसलिये मनुष्य को हरदम सावधान रहना चाहिये जिस से अन्तकाल में भी भगवत्स्मृति बनी रहे ।
अन्त समय में शरीर छूटते समय मनुष्य जिस वस्तु, व्यक्ति आदि का चिन्तन करता है उसी के अनुसार उस को आगे का शरीर मिलता है । जो अन्त समय में भगवान् का चिन्तन करता हुआ शरीर छोड़ता है, वह भगवान् को ही प्राप्त होता है । उस का फिर जनम-मरण नहीं होता । अतः मनुष्य को सब समय में सभी अवस्थाओं में और शास्त्रविहित सब काम करते हुये भगवान् को याद करना चाहिये, जिस से अन्त समय में भगवान् ही याद आयें । जीवन भर राग पूर्वक जो भी कुछ किया जाता है, प्रायः वही अन्त समय में याद आता है ।

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

Gita Essence in English – Chapter 8

The change in species at the at time of death happens according to the final thoughts of the one dying. This is why every human being should remain cautious at all times, so that the memory of God remains even in the last minutes.

At the time of leaving the body, whatever object, person etc a person thinks about, he gets the next body accordingly.

One who leaves his body thinking of God at the end of time, attains God only. **He is freed from the cycle of birth and death.** Therefore, a person should remember God at all times while doing all the work prescribed in the scriptures, so that only God is remembered in the end.

Whatever is done diligently throughout the life, is remembered only at the end.

ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ

ॐ तत्सदिति श्रीमद्भगवद्गीतासूपनिषत्सु ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे
श्रीकृष्णार्जुनसंवादे अक्षरब्रह्मयोगो नाम अष्टमोऽध्यायः ॥

www.thakurbhimsingh.com - Copyright Thakurbhimsingh.com. 2008 - All rights reserved

www.thakurbhimsingh.com - Copyright Thakurbhimsingh.com. 2008 - All rights reserved